दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 57* ❑ *अंक-21* ❑ *दिल्ली* ❑ *अगस्त 2019 (द्वितीय)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

डॉ. अम्बेडकर और दलित चेतना

• डॉ. सुरेश उजाला

डॉ. धर्मवीर ने अपनी पुस्तक डॉ. 'अम्बेडकर और दलित आंदोलन' की भूमिका में कहा है, 'कुल मिलाकर यह बात जरूरी है कि संवैधानिक क्रान्ति को विफल होने से और भारतीय समाज को दुर्घटना से बचाया जाए। इसका उपाय यह है कि इसे कथनी और करनी के अन्तर से और हिप्पोक्रेसी से बचाया जाए। ऐसा पहले भी हुआ है और दार्शनिक स्तर पर हुआ है कि एक व्यक्ति ने एक ओर पारमार्थिक दृष्टि से अद्वैत धर्म का प्रचार किया है और दूसरी ओर अपने व्यावहारिक जीवन में अछूतपन को बरता है। यह अब भी हो सकता है कि एक ओर संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ ली जाए और दूसरी ओर उसे भीतर से नष्ट कर दिया जाए। यह प्रति क्रान्ति की एक महत्वपूर्ण रणनीति होती है।'' डॉ. धर्मवीर इस बात पर बल देते हुए कहते हैं, ''इस विषयक डॉ. अम्बेडकर का कथन उद्धरत करना समीचिन होगा। उन्होंने कहा था– 'अधिकारों की सुरक्षा कानून से नहीं, बल्कि समाज की सामाजिक एवं नैतिक भावना द्वारा हुआ करती है। सामाजिक भावना यदि कानून द्वारा प्रदान किये जाने वाले अधिकारों को मान्यता देने के लिए तैयार है, तो अधिकार सुरक्षित रह सकते हैं, किन्तु यदि समुदाय मूल अधिकारों का विरोधी है, तो कोई भी कानून संसद या न्यायपालिका उन्हें प्रदान करने का यथार्थ आश्वासन नहीं दे सकती।''

भारतवर्ष की बीसवीं शताब्दी को 'गांधी–युग' कहा जा सकता है। इस समय देश ने हजारों साल पुरानी परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ स्वतंत्रता प्राप्त की थी। गांधी इस युग में महानायक के रूप में उभरकर सामने आये। इसी काल में युग पुरुष डॉ. भीमराव अम्बेडकर (14 अप्रैल 1991) का जन्म हुआ, जिन्होंने भारतीय संस्कृति के उत्थान में चिरस्मरणीय योगदान दिया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आगमन से पूर्व दलितों में सामाजिक चेतना की शुरुआत हो चुकी थी। सवर्णों के अनेक महापुरुषों ने दलितों के शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार को शास्त्र– सम्मत सिद्ध किया था जिसमें स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के नाम लिये जा सकते हैं। दूसरा स्वयं दलितों द्वारा दलितों का सामाजिक नेतृत्व उभर कर सामने आया। महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले और केरल में नारायणा गुरू का नाम उभरकर सामने आया। तीसरा ईसाई मिशनरियों का धर्म–परिवर्तन का आन्दोलन था।

डॉ. अम्बेडकर ने तीनों प्रभावों को अपने हाथ में लेकर आगे बढ़ाया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने यह भी सिद्ध करके दिखाया कि इस कार्य में उनके हाथ सबलतम हैं। डॉ. अम्बेडकर ने ज्योतिबा फुले का अपने जीवन में बहुत आदर किया था। उन्होंने हिन्दू धर्म शास्त्रों के अपने युग के धार्मिक व्याख्याकारों को चुनौती, ईसाइयों के धर्म परिवर्तन के आन्दोलन को निष्प्राण एवं निष्क्रिय किया था। डॉ. अम्बेडकर के जीवन संघर्ष और उनके साहित्य एवं दर्शन का अध्ययन करने से पता चलता है कि दलित वर्ग का हमदर्द उनसे बढ़ा कोई नहीं था। उन्होंने जिस वर्ग की लड़ाई अपने हाथों में ली, वह लगभग पिछले दो हजार वर्षों से सोया हुआ था। अज्ञानता में डूबा हुआ था। ऐसे गूंगे और मूक समाज का नेतृत्व हालांकि बहुत ही कठिन कार्य था। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को अपने समाज से नेतृत्व हेतु बल नहीं मिल पा रहा था, बल्कि डॉ. अम्बेडकर उसे शक्ति और दिशा दोनों दे रहे थे। दलित चेतना को सवर्ण समाज उभरने नहीं दे रहा था। दलितों की समस्याओं को सवर्ण समाज अपनी आन्तरिक समस्या मानते थे। लेकिन उसका कोई समाधान भी नहीं करते थे। वे राष्ट्र के सामने दलितों की समस्याओं को स्पष्ट मुद्दा ही नहीं बनने देते थे। लेकिन डॉ. अम्बेडकर ने इस समस्या को अखिल भारतीय स्तर पर खड़ा करके पूरे विश्व के समक्ष समग्र भारतीय जातिबद्ध समाज को ऊपर से नीचे तक झकझोर कर रख दिया था।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलित–चेतना को हर क्षेत्र में अति उच्च स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया। डॉ. अम्बेडकर ने चावदार तालाब से अछूतों को पानी लेने का हक दिलाने हेतु वर्ष 1927 में रत्नागिरि जिले के महाड़ नामक स्थान पर सत्याग्रह किया। मंदिर में दलितों के प्रवेश हेतु कालाराम मंदिर, नासिक पर वर्ष 1930 में सत्याग्रह किया। गोलमेज कांफ्रेंस लंदन में वर्ष 1932 में दलितों के प्रतिनिधि बने। धर्म के क्षेत्र में वर्ष 1936 में 'एनिहिलेशन आफ कास्ट' पुस्तक लिखी। गहन

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सम्पादकीय

मोदी जी–महान, अद्वितीय, अतुलनीय

इतिहास में हजारों साल बाद कभी–कभी ऐसे व्यक्ति पैदा होते हैं जिनके अद्भुत कार्यों और दृढ़–इच्छा शक्ति के परिणामों के सामने शब्दकोश के शब्द भी छोटे पड़ जाते हैं। आज की तारीख में ऐसी ही एक शख्शीयत हैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी, जिन्होंने सिर्फ 15 दिनों में विश्व व राष्ट्रीय स्तर पर तीन ऐसे महान कार्य कर दिये जिनकी मिशाल न पहले कहीं मिलेगी और न ही भविष्य में मिलने की आशा की जा सकती है। इन महान कार्यों में पहला विश्वस्तरीय कार्य है चन्द्रयान–2 की चन्द्रमा की ओर सफल रवानगी। दूसरा सामाजिक महान कार्य है जो मोदी जी ने किया है, वह है देश से तीन तलाक प्रथा का खात्मा। तीसरा उनका महान कार्य है जम्मू–कश्मीर राज्य से धारा 370 व धारा 35–ए को सदा के लिए खत्म करके, राज्य का पुनर्गठन कर जम्मू–कश्मीर व लद्दाख को पृथक–पृथक केन्द्रशासित राज्य बनाना। इससे 70 सालों से देश के लिए सिरदर्द बनी कश्मीर घाटी समस्या का सदा के लिए निपटारा हो गया। ये ऐसी विकट समस्यायें थीं जिनको खत्म करने के लिए कोई सोच भी नहीं सकता था। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अदम्य साहस और दृढ़–इच्छाशक्ति का ही कमाल था जिन्होंने बिना किसी संशय, भय, संकोच के संसद (राज्यसभा) में संख्या बल पक्ष में न होते हुए भी निडरता से मुस्लिम समाज में हजारों सालों से चली आ रही तीन तलाक प्रथा की समाप्ति की घोषणा की और उच्च सदन (राज्य सभा) से भी भारी बहुमत से इस तीन तलाक प्रथा की समाप्ति का बिल पास कराया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पखवाड़े के अन्दर इन तीनों घटनाओं की सफलताओं के सामने भारत देश ही नहीं, समूचा विश्व अचम्भित है और इसके लिए वह मोदी जी को बधाई देकर कह रहा है कि मोदी जैसा ना हुआ है और ना होगा। यह मोदी है तो मुमकिन है जिसके सामने विश्व नेता तो नतमस्तक हुए ही हैं, देश की विरोधी राजनीतिक पार्टियां भी मोदी जी के विरुद्ध एकजुट न रह सकीं। यह भी मोदी जी की रणनीति का ही कमाल है जो राज्यसभा में बहुमत नहीं होते हुए भी तीन तलाक प्रथा का निषेध बिल और जम्मू–कश्मीर से 70 सालों से चली आ रही धारा 370 व धारा 35–ए को हटाने सम्बन्धी बिल को संसद के बाद राज्यसभा (उच्च संसद) से पास करा लिया और तुरन्त इस पर राष्ट्रपति जी की मोहर लगवाकर इसे संविधान सम्मत कानून बना दिया।

मोदी जी की सफल उड़ान–चन्द्रयान–2

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के पहले कार्यकाल में मंगल ग्रह पर भारतीय वैज्ञानिकों ने राकेट भेजा था जिससे मंगल ग्रह के चित्र और अन्य जानकारी भेजी थी।

अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल–2 में भारत ने 21 जुलाई, 2019 को चंद्रयान–2 के सफल प्रक्षेपण को अंजाम देकर अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक और बड़ी छलांग लगा दी। यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और देश के दूसरे विज्ञान एवं औद्योगिक संस्थानों के वैज्ञानिकों के अथम परिश्रम का ही परिणाम है कि चंद्रयान–2 मिशन की सफलता ने भारत को दुनिया के उन देशों की कतार में खड़ा कर दिया है जिनके यान चंद्रमा की सतह पर उतरे हैं। सितंबर के पहले हफ्ते में चंद्रयान–2 का लैंडर चांद की सतह पर उतरने

(शेष पृष्ठ 2 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/–
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

सम्पादकीय का शेष भाग.....मोदी जी–महान, अद्वितीय, अतुलनीय

के साथ अमेरिका, रूस औरा चीन के बाद भारत ऐसे उपलब्धि हासिल करने वाला दुनिया का चौथा देश बन जाएगा।

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों ने हमेशा से अपनी प्रतिभा और क्षमताओं का लोहा मनवाया है। चंद्रमा शुरु से ही वैज्ञानिकों के लिए गहरी दिलचस्पी और शोध का विषय रहा है। माना जाता है कि धरती की उत्पत्ति से जुड़े रहस्य चांद में छिपे हैं।

दुनिया में अब तक जितने भी अंतरिक्ष मिशन दूसरे ग्रहों की ओर भेजे गए हैं, उनका मकसद ब्रह्मांड के बारे में आंकड़े और तस्वीरें जुटाना रहा है, ताकि सृष्टि के रहस्यों पर से परदा उठ सके। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने पिछले तीन–चार दशकों में जिस तेजी से तरक्की है, चंद्रयान और मंगल मिशन जैसे सफल अभियान उसी का परिणाम हैं। चंद्रयान मिशन भारत का पुराना मिशन रहा है और 2008 में भारत ने जो चंद्रयान–1 चांद की कक्षा में भेजा था, उसी से पहली बार धरती के इस उपग्रह पर पानी की मौजूदगी के संकेत मिले थे।

भारत का चंद्रयान–2 मिशन सबसे महत्त्वपूर्ण और जटिल इसलिए भी है कि इस यान को चांद के दक्षिणी ध्रुव पर 'एटकेन बेसिन' नामक जिस स्थान पर उतरना है वहां आज तक कोई अंतरिक्ष यान नहीं पहुंचा है। मौसम के लिहाज से भी यह स्थान काफी चुनौती भरा है। इसके अलावा चंद्रमा पर धूल के गुबार भी बड़ी समस्या हैं। ऐसे में चंद्रयान–2 के लैंडर और रोवर में जो उपकरण लगे हैं, वे सही से काम करते रहें, वैज्ञानिकों के लिए यह बड़ी चुनौती है।

चंद्रयान–2 मिशन की सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि इसके निर्माण में ज्यादातर योगदान भारतीय संस्थानों और कंपनियों का ही रहा है। इसके लिए भारत को दूसरे देशों का मुंह नहीं ताकना पड़ा। रोवर आइआइटी–कानपुर में विकसित किया गया है जिसे पानी और खनिजों के बारे में जानकारी जुटानी है।

चन्द्रयान–2 की सफलता के पीछे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन के साथ हर तरह का पूर्ण सहयोग देना है। उसी से प्रोत्साहित होकर भारतीय वैज्ञानिकों ने दिन–रात कड़ी मेहनत करके समय सीमा में चन्द्रयान–2 को सफलता से आकाश में प्रक्षेपित करने में कामयाबी पाई। पहले ही प्रयास में चन्द्रयान–2 में राकेट का प्रक्षेपण करके भारत ने अमेरिका, रूस, चीन के साथ अपना चौथा नाम दर्ज करा लिया है जो देश की समग्र जनता के लिए गर्व की बात है। इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदृष्टि, साहस, दृढ़ संकल्प की दाद देनी होगी, जो उन्होंने कहा उसे करके दिखाया। जो चन्द्रमा हमारे लिए एक ग्रह–चन्दामामा के रूप में एक मिथक और कल्पना था, अब भारत भी उस पर मनुष्य भेजकर अपनी बस्ती बसाने की इच्छा को पूरा करने में जुटा है। इसके लिए हमारे अन्तरिक्ष वैज्ञानिक भी बधाई के पात्र हैं जो कल्पनाओं को साकार करने में जुटे हैं।

तीन तलाक प्रथा निषेध कानून

मुस्लिम समाज में कोई भी व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक–तलाक–तलाक–तीन बार बोलकर या फोन पर बोलकर उससे छुटकारा पा लेता था, अगर वह उससे दुबारा निकाह करना चाहे तो पहले उसे किसी अन्य व्यक्ति के साथ 'हलाला' करना होगा जिसके आधीन उसे कुछ दिन के लिए उसकी 'बीबी' (पत्नी) बनकर रहना पड़ता था। मुल्ला व मौलवियों की इसमें मौज–मस्ती थी, पर तलाक दी गई मुस्लिम स्त्री की जिन्दगी तो इससे नरक बन जाती थी, साथ ही उसके छोटे–छोटे बच्चों को भी नरकीय जीवन से गुजरना पड़ता था। मुस्लिम धार्मिक कानून–'शरीयत' के नाम पर हजारों साल से यह तीन तलाक प्रथा चली आ रही थी, जिस पर किसी भी पूर्ववर्ती सरकार ने कानून बनाकर इस पर रोक लगाने की जरूरत नहीं समझी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने अपने पहले कार्यकाल में इस तीन तलाक प्रथा पर रोक लगाकर खत्म करने का संकल्प लिया था। इसके लिए उसने कानून बनाने की पहल की थी, पर तीन तलाक निषेध बिल लोकसभा में तो पास हो गया, पर भाजपा (एनडीए) के सदस्यों का राज्यसत्ता में संख्या बल कम होने के कारण यह बिल राज्यसभा में पास नहीं हो सका था। पर अब मोदी सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल में अपने संकल्प को दोहराते हुए इस तीन तलाक निषेध बिल को अपने बल पर लोकसभा से पास करा लिया और फिर अपनी रणनीति के तहत विपक्षी वोटों की एकजुटता खत्म कर इसे उच्च सदन (राज्यसभा) से भी पास कराकर 30 जुलाई, 2019 को इतिहास रच दिया। अब राष्ट्रपति जी की मोहर लगकर यह बिल–तीन तलाक निषेध कानून बन गया। मोदी सरकार का

में एक विधान होगा। केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने जम्मू–कश्मीर पर ऐतिहासिक फैसला लेते हुए जम्मू–कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान की धारा 370 को हटाने का एलान किया। इससे जम्मू–कश्मीर का अलग संविधान को निरस्त कर दिया गया। अब वहां पर भारतीय संविधान लागू होगा और सिर्फ भारतीय तिरंगा झंडा फहरायेगा, इसके साथ ही राज्य का पुनर्गठन करके अब जम्मू–कश्मीर से लद्दाख अलग कर दिया गया है। अब जम्मू–कश्मीर और लद्दाख–दोनों प्रदेश केन्द्र शासित प्रदेश होंगे और अब दिल्ली की तरह वहां उप–राज्यपाल होगा। जम्मू–कश्मीर में विधानसभा होगी, पर लद्दाख में विधानसभा नहीं होगी।

दोनों सदनों से धारा 370 को खत्म करने के संकल्प पत्र को स्वीकृति मिलने के बाद राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 6 अगस्त, 2019 को जम्मू–कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद (धारा) 370 के प्रावधानों को निरस्त करने की घोषणा की। इससे संवैधानिक रूप से जम्मू–कश्मीर का विशेष राज्य का दर्जा खत्म हो गया।

15 अगस्त, 1947 को भारत अंग्रेजों से आजाद हुआ। उस समय

पृष्ठ 1 का शेष...डॉ. अम्बेडकर और दलित चेतना

अध्ययन और विश्लेषण के बाद उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण किया। वर्ष 1947 में नेहरू मंत्रिमंडल में कानून मंत्री बने तथा वर्ष 1948 में ड्राफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष के रूप में संविधान असेम्बली में मसौदा प्रस्तुत कर भारतीय संविधान निर्माता बने। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए वर्ष 1950 में औरंगाबाद में मिलिंद महाविद्यालय की स्थापना की।

धम्म के क्षेत्र में उन्होंने वर्ष 1956 में प्रकाशित महानतम ग्रंथ 'द बुद्धा एंड हिज धम्म' लिखा, जो बौद्ध–बाइबिल कही जाती है। उन्होंने शूद्रों और अछूतों के प्राचीन इतिहास को बहुत ही गम्भीरता के साथ खोजा और जांच–पड़ताल की। दूसरे विद्वान उसे पढ़ते ही उनकी बौद्धिक क्षमता का लोहा मान लेते हैं। वर्ष 1946 में उन्होंने ''हू वर शूद्राज', हाउ दे केम टु बी द फोर्थ वर्णा इन इन्डो–आर्यन सोसायटी'' और वर्ष 1948 में 'द अनटचेबल्स–हू वर द एण्ड व्हाई द बिकेम अनटचेबल्स?' नामक दो खोजपूर्ण पुस्तकें लिखीं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने वर्ष 1953 में 'सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ कामर्स एंड इकोनोमिक्स, बम्बई' की स्थापना की तथा जून, 1956 में सिद्धार्थ ला कॉलेज बम्बई को खड़ा किया। अप्रैल, 1942 में शेड्ल्ड कास्ट फेडेरेशन और वर्ष 1956 में 'रिपब्लिकन पार्टी' को जन्म देकर दलितों की समस्याओं का राजनीतिकरण किया। जिन्हें आदमी कहने में लोगों को एतराज था, उनकी लड़ाई को राजनैतिक स्तर पर लाकर लड़ा जाए। यह डॉ. भीमराव अम्बेडकर का विश्व के सामाजिक जीवन में मानवीय स्तर पर जबर्दस्त योगदान था। यह अम्बेडकर के चिन्तन की इतनी ऊंची छलांग थी कि दुनिया की उठती हुई दूसरी गरीब कौमों के लिए एक अनूठी मिसाल बनी। अमेरिका के नागरिक होते हुए भी नीग्रो को वोट डालने का हक बहुत बाद में मिला।

डॉ. अम्बेडकर ने दलित चिन्तन को विस्तार और गहराई दोनों दी। दलित, शोषित एवं उपेक्षित लोगों के उद्धार के लिए आजीवन संघर्ष कर 26 जनवरी, 1950 को देश में लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली बनाकर तथा बालिग मताधिकार का प्रावधान कर डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलितों के मसीहा बन गये। बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारतीय संविधान बनाते समय अन्य पिछड़ा वर्ग के हितों का पूरा–पूरा ध्यान रखा और अनुच्छेद 340 के तहत उनके पिछड़ेपन के तहत पिछड़े वर्ग के लोगों को जो भी आरक्षण एवं अन्य सुविधाएं मिल रही हैं, यह सब संविधान के अनुच्छेद 340 की ही देन है। वर्ष 1951 में 'हिन्दू कोड बिल' पास न होने के कारण उन्होंने मंत्रिमंडल से त्याग पत्र दे दिया तथा 14 अक्तूबर, 1956 को नागपुर में बौद्ध–धम्म की दीक्षा ली।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सम्पूर्ण जीवन मानवाधिकार के प्रति समर्पित और चिन्तन पूर्णतः मानवीय मूल्यों पर आधारित रहा। संविधान उनकी साधना का प्रतीक है। इस अप्रतिम योगदान हेतु देश सदैव उनका नमन करेगा। देश में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में अस्पृश्यता का नाश होगा और सभी को बराबरी का हक मिलेगा। •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

संकल्प पूरा हुआ। उसकी दृढ़–इच्छा शक्ति की जीत हुई। करोड़ों मुस्लिम महिलाओं को अब तीन तलाक प्रथा से छुटकारा मिल गया। अब वे अपने समाज में सम्मान के साथ सिर ऊंचा करके जी सकेंगी। प्रधानमंत्री मोदी ने इसे ऐतिहासिक कदम बताते हुए कहा कि सदियों से तीन तलाक की कुप्रथा से पीड़ित मुस्लिम महिलाओं को आज न्याय मिला है। अब वे देश की अन्य महिलाओं की तरह सम्मान की जिन्दगी जी सकेंगी।

यह मोदी जी का साहसिक कदम और दृढ़इच्छा शक्ति ही थी जिसके आधार पर वे तीन तलाक निषेध बिल का दोनों सदनों से पास कराकर कानून बना दिया।

जम्मू–कश्मीर राज्य से धारा 370 खत्म

जम्मू–कश्मीर राज्य को भारतीय संविधान की धारा 370 के अन्तर्गत विशेष राज्य का दर्जा मिला हुआ था। इसके अन्तर्गत उसे अपना अलग संविधान, अलग निशान (झंडा) रखने का अधिकार मिला हुआ था। इस संविधान के कारण जम्मू–कश्मीर से बाहर का कोई भी व्यक्ति वहां जमीन नहीं खरीद सकता था।

5 अगस्त, 2019 को मोदी सरकार ने इतिहास में दर्ज की तारीख राज्यसभा के बाद लोकसभा में भी बहुमत से धारा 370 हटाने का निर्णय लेकर। कश्मीर से कन्याकुमारी तक अब देश जम्मू–कश्मीर का राजा हरिसिंह था। उसने ही जम्मू–कश्मीर को भारत में विलय का प्रस्ताव किया, पर वहां के नेता जम्मू–कश्मीर को भारत में रहने हुए भी अपने राज्य के लिए विशेष दर्जा चाहते थे। प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने उन कश्मीरी नेताओं की बात मानते हुए उन्हें विशेष दर्जा देना स्वीकार कर लिया जबकि भारतीय संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर एवं केन्द्रीय गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल इसके विरुद्ध थे पर प्रधानमंत्री नेहरू के भारी दबाव के कारण उन्हें भी धारा 370 के अन्तर्गत विशेष राज्य का दर्जा देने के लिए तैयार होना पड़ा।

इस तरह से पिछले 70 सालों से यह धारा 370 देश के लिए सिरदर्द बनी हुई थी और भारत–पाकिस्तान के बीच इस पर विवाद चलता रहता था। अब नरेन्द्र मोदी सरकार ने धारा 370 खत्म कर जहां जम्मू–कश्मीर को देश की मुख्यधारा से जोड़ दिया, वहीं उसने बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की बात को भी सम्मान दिया है। अब जम्मू–कश्मीर में देश के लोग जमीन खरीदकर बस सकेंगे, वहीं वहां भारतीय संविधान पूरी तरह से लागू होगा और दलितों व पिछड़ों को नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में आरक्षण का लाभ मिल सकेगा। इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कोटि–कोटि बधाई।

–डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

समता के बिना धर्मनिरपेक्षता की राह सुगम नहीं

• नन्दलालराम भारती

महान समाज सुधारक भक्त शिरोमणि रविदास जी के शब्दों में अगर कोई परमात्मा से तदात्मय चाहता हैं तो उसको उसके बन्दों से भी समझौता करना पड़ेगा। क्योंकि संसार परमात्मा की ही अभिव्यक्ति हैं जिसमें वह स्वयं विद्यमान रहता हैं। भगवान अपनी सृष्टि के द्वारा ही स्वयं को प्रकट करता है। अगर परमात्मा को ढूढ़ना है तो उसकी सर्वोत्तम कृति उसके बन्दे मानव से ही प्रेम करो, परन्तु दुर्भाग्यवस ऐसा हो नहीं रहा हैं प्रेम के विपरीत जातिवाद, सम्प्रदायवाद, धर्मवाद का विष सिर चढ़कर बोल रहा हैं, जबकि वर्तमान दोर में समाज एवं राष्ट्र को जरूरत है समानता से पोषित धर्मनिरपेक्ष समाज की।

धर्मनिरपेक्षता का भाव हमारे हृदय में स्थान तब तक नहीं बना सकता जब तक कि हम पूर्णरूपेण समतावादी न हो जाये। इसके लिए जरूरत होगी कि हम सभी प्रकार की कटटरताओं चाहे वे जातिवाद हो, धर्मवाद हो, ऊंचनीच का भाव हो या अन्य कोई विषमता, सभी को त्याग कर मानवता के लिये सच्च मन से आगे आना होगा तभी समानता का भाव फलीभूत होगा और धर्मनिरपेक्षता का जो सपना हैं पूरा होगा।

हकीकत में उदाहरण प्रस्तुत करने का समय आ गया है। दूसरे शब्दों में सत्ताधीशों के परीक्षा की घड़ी आ गयी है कि वे विषमता के समर्थक हैं या समता के। यदि विषमता का जहर मानवता की नसों में ऐसे ही उतरता रहा तो यह जहर देश और समाज के लिये खतरनाक साबित होगा।

अब वक्त बदल चुका है। दूरियां सिमटने लगी हैं पर दिलों की दूरियां पूर्वत कुलाचें मार रही हैं। आज भी भेदभाव का आलम पसरा पड़ा है। समाज से लेकर दफतर तक भेदभाव की इन दूरियों को पाटना ही होगा। देश और समाज की तरक्की के लिये समय के बदलाव के साथ ही आर्य अनार्य की विरासत भी साझी हो गयी हैं तो जातीय भेद क्यों? वक्त आ गया हैं इस साझी विरासत को संवारने का जातीयता से उपर उठकर समतावादी समाज बनाकर और नातेदारी स्थापित करके ही भेदभाव की इस खायीं को भरा जा सकता हैं। जब तक देश में जातिवाद हैं देश धर्मनिरपेक्ष हो ही नहीं सकता। धर्मनिरपेक्ष कहना मात्र छलवा ही होगा।

समता के बिना धर्मनिरपेक्षता की राह सुगत हो ही नहीं सकती। समता की राह पर चलकर ही धर्मनिरपेक्षता इंसान के बीच सद्प्रेम, सद्भाव के भाव पुष्पित होंगे तभी सही मायने में धर्मनिरपेक्षता का बीजारोपण हो सकता हैं। समता की राह पर चलकर ही धर्मनिरपेक्षता की राह सुगम होगी और इसके बाद ही सामाजिक, आर्थिक क्रान्तिकारी परिवर्तन सम्भव है वरना पानी में लाठी पीटना ही साबित होगा।

आज के वैश्वीकरण के दौर में मानव स्वार्थ सिद्धि में लगा हुआ हैं। वह मानव तथा देश धर्म को बिसार चुका है। चहुंओर स्वार्थ की लहर दौड़ पड़ी है। श्रम हो या व्यापार का मण्डी या सत्ता काग गलियारा। यदि वैश्वीकरण के साथ साथ मानवता और देश के प्रति अपने दायित्वबोध के साथ समतावादी विचारधारा ही धर्मनिरपेक्षता की राह में मिल का पत्थर साबित हो सकती हैं, पर ईमानदारी के साथ लागू किया जाये तब ना। सच मानवता को धर्म के रूप में अपनाना ही विश्वबन्धुता के भाव में अभिवृद्धि तो होगी ही, समतावादी से धर्मनिरपेक्षता भी फलेगी फूलेगी। परिणामस्वरूप क्रान्तिकारी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षाणिक उन्नति होगी जिस उन्नति से देश दुनिया के विकसित देशों की अग्रंपक्ति में काबिज होगा। सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन के लिये आज जरूरी हो गया है कि अन्तर्जातीय एवं अन्तर्धार्मिक मित्र समूह बनाये जायें जो लोकतान्त्रिक ढांचे को तो मजबूती देंगे ही, साथ ही समता व धर्मनिरपेक्षता भी विकासोन्मुखी होगी।

वर्तमान में मुददा धर्म के विरोध अथवा समर्थन का नहीं है बल्कि उसमें व्याप्त बुराईयों का उन्मूलन कर उच्चस्तरीय लोकतान्त्रिक आदर्श निरूपित करने का है। भूमंडलीयकरण के दौर में विकास के बहुराष्ट्रीय साम्राज्यवादी ढांचे में भी धार्मिक, जातीय और मानसिक संकीर्णताओं के स्रोत व्याप्त है। स्वतन्त्रता के इतने बरस बीत जाने के बाद भी ग्रामीण जनता तक लोकतन्त्र नहीं पहुंचा हैं। वहां आज भी सामन्तशाही माहौल है। जिससे शोषित पीड़ित खेतिहर मजदूर वर्ग आज भी अपनी बेहाली पर आंसू बहा रहा है। पर्याप्त जमीन होने के बाद भी आवंटन तक नहीं हुआ है बहुत से गांवों में। गांव समाज की जमीन आज भी सामन्तशाह लोग हड़प कर बैठे हुए हैं। जिससे एक बड़ा वर्ग भूखमरी बेरोजगारी का शिकार तो हैं ही ऊपर से जातीय भेद का भी हलाहल पीना पड़ रहा है। यही हाल व्यापार जगत में भी हैं। जातीय भेद और अपनी कमजोरी गरीबी की वजह से वहां कदम ही नहीं रख सकता। यह कैसी आजादी है? राष्ट्रीय अखण्डता, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक न्याय दलितोत्थान के लोकलुभावने नारों से बाहर निकलकर लोकतन्त्र के रखवालों को शोषित, पीड़ित, वंचित वर्ग के कल्याण के लिये आगे आना होगा, तभी आजादी का कुछ औचित्य शोषित पीड़ित वंचित वर्ग के लोगों महसूस होगा। लोकतन्त्र के पहरेदारों को कमर कसकर जनहित में कूदना पड़ेगा। जातिवाद का जहर तो सत्ता के गलियारे तक उमड़ने लगा हैं जो सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति में बाधक सिद्ध हो रहा हैं। सामाजिक बुराइयों से निपटने के लिये व्यापक स्तर पर सामाजिक एवं राजनैतिक जंग का ऐलान करना होगा। लोकतन्त्र के सिपाहियों को तभी जातिवाद, पक्षपात, भ्रष्टाचार का उन्मूलक होगा और राष्ट्र विकास की दौड़ में सरपट दौड़ने लगेगा। सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन एवं जन जागरण के बिना धर्मनिरपेक्षता के सोपान चढ़ना काफी कठिन कार्य हैं जब तक सामाजिक बुराइयों का साम्राज्य है तब तक देश एवं समाज की तरक्की भी बाधित रहेगी। •

आज देश के हर धर्म सम्प्रदाय में रूढ़िवादिता तथा कट्टरपंथी तत्व विराजमान है जिससे समतावादी एवं मानवतावादी अवधारणा पोषित ही नहीं हो पा रही है। नतीजन शोषण, उत्पीड़न, जातिवाद विज्ञान के युग में भी कायम हैं। रूढ़िवादिता लोगों के दिलों में इतनी गहरी बैठ चुकी है कि विषमतावादी मानव इस मोह से उबर ही नहीं पा रहा है। तथाकथित उच्च लोग छोटी बिरादरी के लोगों पर जुल्म किये जा रहे हैं। कानूनी आश्रय के बाद भी, यदि विषमता के विष का दरिया ऐसे ही उफनता रहा तो पूरी कायनात के लिये एक ना एक दिन घातक साबित होगा। समाज व देश के शुभ चिन्तकों को साम्प्रदायिक एवं कट्टरपंथी व्यक्तियो संगठनों के विरूद्ध खड़ा होने की हिम्मत जुटानी पड़ेगी तथा जातिवाद भेदभाव के उन्मूलन के लिये विषमतावादी लोगों अथवा संगठनों से सीधी टक्कर लेनी होगी। समतावादी साम्राज्य स्थापित करने में राजसत्ता, मील का पत्थर साबित हो सकती है बशर्ते वह ईमानदारी पूर्वक कार्य करें। आज राजसत्ता का उपभोग करने वाले लोगों का नैतिक दायित्व बन गया है कि वे समतावादी दृष्टिकोण अपनायें जातिवाद भेदभाव के उन्मूलन के लिये आगे आये, तभी धर्मनिरपेक्षता का सपना पूरा हो सकता हैं। समता हेतु तो जबानी घोडे सत्ताधीश लोग आजादी के बाद से ही दौड़ रहे हैं, तब अब की पताका लहराई जा सकती हैं वरना धर्मनिरपेक्षता का झूठा राग चेहरा बदल बदलकर अलापना कोई परिणाम नहीं ला सकेगा वास्तविकता के धरातल। त्याग, सेवा और स्वभाव राष्ट्र के आदर्श होता हैं। इस आदर्श की जगमगाहट के लिये स्व–जातीय अभिमान को त्याग कर देश धर्म और स्वभाव को आत्मसात करना होगा जातीय अभिमान को त्यागना पड़ेगा, सभ्यसमाज और देश की तरक्की खातिर। वर्तमान में जिस धर्मनिरपेक्षता की बात की जा रही हैं उसमें मानवता को तो कोई स्थान ही नहीं दिया जा रहा हैं। व्यक्ति स्वार्थ की बात करने लगा हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने कहा है ''लोकतन्त्र सरकार का ऐसा रूप और तरीका है जिससे किसी खून खराबे के बिना जनता के आर्थिक और सामाजिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाये जा सकते हैं, परन्तु आजादी के दशकों बाद भी समानता की क्रान्ति देश में नहीं आयी। आज भी दलित शोषित पीड़ित जन जातिवाद का जहरीला घूंट पी कर तड़प तड़प कर जी रहे हैं।

धर्मनिरपेक्षता का सम्बन्ध केवल धर्म से नहीं जोड़ा जाना चाहिये। सद्धार्मिकता और संस्कृति देश की धरोहर होती है। इस धरोहर पर समता की सुनहरी परत चढ़ाने का समय आ गया है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो जातिवाद की विषबेल युग युगान्तर ऐसे ही फैलती रहेगी। जब इंसान

ईश्वर का अवतार–पिछड़ों व दलितों के लिए नहीं

• ब्रजकिशोर सिंह (झारखंड)

'अवतारवाद' पाखंड बितंडा को लेकर कबीर की वेदना उभर कर सामने आती है वे कहते हैं कि–''दस अवतार निरंजन कहिये सो अपना न कोई''। **इन अवतारों ने ब्राह्मणों के कल्याण के लिए भले ही अवतार लिया हो लेकिन दलितों, शोषितों और पिछड़ों के उद्धार के लिए एक भी सामने नहीं आया।**

तथाकथित लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा को भी एक बहुत बड़ी, अस्पृश्य आबादी को सम्पत्ति, शिक्षा और बल से वंचित रखने में ही मजा आया। धन्यवाद तो हमें इस्लाम और ईसाइयत को देना चाहिए जिन्होंने भारत को समता और मानवता के साथ–साथ सामाजिक न्याय का सबक सिखाया। हमें पशुवत जीवन की यातनाओं से निजात दिलाया। विडंबना यह कि सनातन संविधान और तर्कवाद में आज भी छत्तीस का रिश्ता रहा है।

इक्कीसवी सदी में भी भारत की आधी से अधिक आबादी को यह भी पता नहीं कि धरती सूरज का चक्कर काटती है या सूरज धरती का। उन्हें तो यह भी पता नहीं कि राष्ट्रपिता गांधी थे या गोडसे। सनातन द्विज साहित्यकारों ने और मनुवाद के रखवालों ने एक बहुत बड़ी आबादी की आंखों में धूल झोंककर, मूर्ति भंजक, वेद निन्दक अनीश्वर वादी चार्वाक, बुद्ध, कबीर और अम्बेडकर के दर्शन को भी दूषित कर दिया और बुद्ध को विष्णु को अवतार मनुवादी साहित्यकारों ने घोषित कर दिया।

विष्णु तो जल में कछुआ और मछली तो धरती पर सूअर बनकर अवतरित हुआ है, लेकिन एक बार भी चंडालों–अछूतों को जल लेकर पवित्र नहीं किया। यह ग्राह के मुख से हाथी की जान बचाने के लिए, जल में दौड़ पड़ा था, लेकिन अछूत के लिए ब्राह्मणी अस्पृश्यता के कलंक को मिटाने की सुध उस विष्णु को आज तक नहीं आई।

यहीं विष्णु कृष्ण के रूप में द्रौपदी की साड़ी बढ़ाने को आ गया, पर हजारों साल से करोड़ों की संख्या में अछूतों की एक बहुत बड़ी नंग–धंड़ग आबादी की चीख पुकार सुनकर भी अनसुनी कर देता है। **लगता है गैर द्विज का उस विष्णु से कोई रिश्ता ही नहीं है।** सनातन धर्म उसके धर्मशास्त्र, धर्मस्थल उसमें निवास करने वाले ईश्वर तो ब्राह्मणों के ही द्वारा निर्मित है।

यह कटु सम्यक सत्य है जो साहित्यकार भाग्य, भगवान, पुनर्जन्म, स्वप्न पर आधारित अंधश्रद्धा, पाखंड, वितंडा और अवतारवादी साहित्य की रचना करता है, वह साहित्यकार नहीं, पढ़ा लिखा मूरख है। वह सामाजिक न्याय की मंजिल, समता–मानवता और विश्व बंधुत्व का दुश्मन है और विवेक, विज्ञान और तर्कों से कोसों दूर है।

बाबा सबके भाग्य बदल गये

जातिवाद था जो सदियों से,
छुआछूत थी जो सदियों से।
भेदभाव था जो सदियों से।
उनको अपने हाथ मसल गये।
बाबा सबके भाग्य बदल गये।।

शाला द्वार बंद दलितों को,
मंदिर द्वार बंद दलितों को,
संसद द्वार बंद दलितों को,
अपने हाथ खोल गये।
बाबा सबके भाग्य बदल गये।।

बिजनिस बंद पड़े थे अपने,
मार्ग बंद पड़े थे अपने,
कागज कलम बंद थे अपने,
सबको लिखकर धर गये।
बाबा सबको सब कुछ कर गये।।

बाबा सबके भाग्य बदल गये।
विपदा अपने हाथ मसल गये।।

– रामसहाय बरैया

हिमायती
4 / अगस्त (द्वितीय), 2019 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 अगस्त, 2019

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 14 अगस्त, 2019

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन

• प्रो. (डॉ.) सविता मेन्ढे कांबले

हिन्दू समाज का स्वरूप किस प्रकार का है, इसके बारे में डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने बहुत ही विस्तार से लिखा है। इस दृष्टि से उनके संपूर्ण साहित्य को गम्भीर रूप से पढ़ने की आवश्यकता है और उस पर अमल करने की आवश्यकता है। भारतीय नारी समाज के उत्थान की दृष्टि से डॉ. अम्बेडकर का संवैधानिक कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। संपूर्ण भारतीय समाज का स्वरूप और विशेष तौर पर हिन्दू समाज का स्वरूप सदियों से जातिवादी है, वर्णवादी है। प्रत्येक हिन्दू का यह विश्वास है कि हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था दैवी है, ईश्वर निर्मित है। हिन्दुओं का साहित्य इन्हीं बातों से भरा पड़ा है। वेदों से लेकर रामायण तक ईश्वरवाद समाज व्यवस्था का हिन्दू लोग आज भी समर्थन करते है।

पहले हिन्दू समाज व्यवस्था वर्णवादी थी। उसमें ब्राह्मण वर्ण का स्थान सबसे ऊपर था। आज हिन्दू समाज व्यवस्था जाति पर आधारित है इसमें भी ब्राह्मण जाति सब से ऊपर हैं। बाबा साहब अम्बेडकर ने वर्णवादी व्यवस्था को शोषण हिन्दू व्यवस्था को विसमता पर'' आधारित है। एक वर्ण दूसरे वर्ण के साथ कैसा व्यवहार करे, इसके बन्धन तो हिन्दू धर्म में हैं, किन्तु एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति कैसा व्यवहार करे, इसकी शिक्षा हिन्दू धर्म में नहीं है। जो धर्म एक को ''ग्यानी'' बनाये रखने के लिए दूसरे को 'अग्यानी' या 'अनपढ़' बनाये रखना चाहता है, वह धर्म नहीं है, बल्कि लोगों को मूर्ख बनाये रखने का षड्यंत्र है। जो धर्म एक के हाथों में शस्त्र देकर दूसरे को निशस्त्र बनाये रखता है वह धर्म नहीं है, बल्कि एक के द्वारा दूसरे को गुलामी में रखने की चालाकी है। जो धर्म कुछ लोगों के लिए धन प्राप्त करने का मार्ग खुला रखता है और शेष लोगों को जीवन निर्वाह के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की शिक्षा देता है, वह धर्म नहीं स्वार्थ का पुलिदां है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को इतना अधिक पतित समझे कि उसको छूने से इन्कार करे, ऐसी प्रथा हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज के अलावा अन्य किसी धर्म के समाज में नहीं है। अस्पृश्यता हिन्दू धर्म पर एक कलंक है, ऐसा कुछ लोग कहते हैं। लेकिन एक भी हिन्दू ऐसा नहीं मिलेगा जो चिकित्सा करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुयी, क्योंकि इसमें उनका जाति स्वार्थ था क्योंकि वे सभी नेता उच्च हिन्दू जाति के थे, इनके दिलो–दिमाग में सामंतवाद था। ये नारी सुधार के प्रति भी बहुत उदार नहीं थे। आज भी हम देखते हैं कि स्वतंत्र भारत में हिन्दू नारी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है और हिन्दू नारी हिन्दुत्व का नरक संस्कारों के रूप में आज भी अपने सर पर ढो रही है। क्योंकि वह हिन्दू है।

डॉ. अम्बेडकर की जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में जो मान्यता थी, भारतीय नारी की दासता के बारे में उनकी जो मान्यता थी और उनके समकालीन नेता, चिन्तक, समाज सुधारकों की जो मान्यता थी, उनमें काफी फर्क था। भारत के समाजवादी, साम्यवादी, गांधीवादी और हिन्दुवादी लोग आज भी अपनी जाति चेतना से पूरी तरह मुक्त नहीं हुये हैं। आज भी सारे समाज में एक ऐसा वर्ग सक्रिय है जो हिन्दू सनातनवाद को पुनः स्थापित करना चाहता है। आधुनिक भारत में में दिया है। उन्होंने खासतौर पर कुछ बातों पर विशेष ध्यान दिया। उनमें से एक थीं अन्तर्जातीय विवाह, जिससे कई जातियां इकट्ठा खान–पान को जिससे जाति–व्यवस्था कमजोर होकर नष्ट हो। लेकिन उनका यह विचार सनातनी हिन्दू समाज व्यवस्था में सफल सिद्ध नहीं हुआ। तब उन्होंने 1935 में धर्मांतर की घोषणा की और उनकी यह मान्यता थी कि हिन्दू धर्म और समाज में पैदा हुई जाति व्यवस्था धर्मांतरण से ही समाप्त हो सकती है और आज हम समाज में धर्मातरण के कारण जो परिवर्तन देखते हैं वह परिवर्तन काफी क्रांतिकारी परिवर्तन है। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का यह धर्मातर का विचार, सामाजिक क्राांति का विचार काफी प्रभावी सिद्ध हुआ है। हिन्दू धर्मांतरण से ही घबड़ाते हैं। वे धर्मांतरण के कारण ही सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करते हैं।

आज धार्मिक तथा साम्प्रदायिक उथल–पुथल के कारण उसी प्रकार धार्मिक कट्टरता के कारण भारत पुनः विभाजन के कगार पर खड़ा है। जिस तरह मुस्लिम कट्टरता हे, उसी तरह हिन्दू कट्टरता है, जिसके कारण भारत के सामाजिक परिवर्तन को और राष्ट्रीय एकता को खतरा पैदा हुआ है। उसी तरह आज हर जगह धर्मवाद पर, प्रांतवाद पर भाषावाद पर कई हिंसात्मक घटनाएं घट रही हैं। कुछ लोग साम्प्रदायिक दंगों को तूल दे रहे हैं। इस तरह की बातों से सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्यों की बड़ी हानि होती है। डॉ. अम्बेडकर इन सभी बातों से दूर रहने की सलाह देते हैं। वे धार्मिक कट्टरता से दूर रहने की शिक्षा देते हैं। डॉ. अम्बेडकर का दर्शन भगवान बुद्ध के मध्यम मार्ग पर आधारित है, अतिवाद पर नहीं दलितों को हिन्दुओं के किसी नेता के भड़काऊ भाषणों से उत्तेजित नहीं होना चाहिए। धार्मिक कट्टरतावाद को रोकने के लिए आज हमें बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के विचारों की आवश्यकता है। डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक चिन्तन के कई पहलू है, जो आज भी भारत में सामाजिक क्रांति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस देश में अम्बेडकरवाद की ब्राह्मणवाद को समाप्त कर सकता है। इस देश में अम्बेडकरवाद ही सामाजिक समनता ला सकता है। •

शोषण की व्यवस्था कहा है। जहां शोषण है, उसके विरोध में संघर्ष, यही बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा है। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर आधुनिक भारत के पहले महापुरुष हैं जिन्होंने इस व्यवस्था को शोषण की व्यवस्था, अमानवीय व्यवस्था कहा है। वे महात्मा गांधी की तरह जर तर वाले व्यक्ति नहीं थे।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के जीवन संघर्ष को जानने के लिए और आज भी उनके महत्व को जानने के लिए उनके जीवन की कुछ बातों को अच्छी तरह जानना बहुत जरूरी है। उनका संपूर्ण जीवन ही हमारे लिए प्रेरणा है। वे ही हमारे लिए सबसे बड़े आदर्श हैं और उन्हीं के मार्ग पर चलकर अपने मानवीय अधिकारों को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने 31 मई, 1936 को मुम्बई की महार परिषद में हिन्दू धर्म के बारे में और व्यवस्था के बारे में विचार व्यक्त किये हैं, वह आज भी महत्वपूर्ण हैं। हिन्दू समाज आज पूरी तरह बदल गया, यह मानने की आवश्यकता नहीं है। आज भी हिन्दुओं में सामाजिक विषमता का जहर बोने वालों की संख्या कम नहीं है। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि ''हिन्दू धर्म की रचना वर्ण कहे कि हिन्दू धर्म ही अपने में एक कलंक है। इस तरह के विचार उन्होंने व्यक्त किये। इससे पता चलता है कि हिन्दू समाज का स्वरूप किस तरह का है। केवल बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ही ऐसे व्यक्ति थे जो हिन्दू समाज के खिलाफ उनकी परंपरागत रूढ़ियों के खिलाफ लड़ रहे थे। लेकिन उस समय महात्मा गांधी रामनाम जप रहे थे। डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू समाज व्यवस्था की गहराई से चिकित्सा की। उन्होने हिन्दू धर्म और तत्वों की चिकित्सा की। उनके पूर्व या समकालीन जितने भी नेता, क्रांतिकारक या समाज सुधारक थे वे सभी हिन्दू समाज के भीतर रहकर सुधार की बातें करते थे। उनमें राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी आदि थे। ये सभी नेता वर्णव्यवस्था का, जाति व्यवस्था का, समाज में असमानता का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष समर्थन ही करते थे। वे हिन्दू नेता हिन्दू समाज में सुधार होना चाहिए, दलित जाति में सुधार होना चाहिए इस बात को मानते थे, लेकिन वर्ण व्यवस्था बनाये रखने का प्रयास कर रहे थे। इन समाज सुधारकों को कभी भी हिन्दू धर्म की गहरायी में जाकर धार्मिक अन्धापन, धार्मिक पाखण्ड, पुरोहितवाद के भी वे घोर विरोधी थे। आज संपूर्ण भारत में जिस ढंग से हिन्दूवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है उसका उद्देश्य ही है डॉ. अम्बेडकर के विचारों को, उनके प्रयासों को समाप्त कर देना। लेकिन ऐसे हिन्दूवाद का विरोध हम डॉ. अम्बेडकर के विचारों से कर सकते हैं और उसके लिए तैयार होने की जरूरत है।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने इन धर्म के ठेकेदारों को, रखवालों को, ऊंच–नीच समाज में पैदा करने वालों से सीधा सवाल किया था कि जो शोषण करने वालों का धर्म है, दर्शन है, वही धर्म और दर्शन शोषित वर्ग का कैसे हो सकता है? उन्होंने यह भी कहा था कि अछूतपन हिन्दू समाज का कलंक है। कोढ़ है। भारत के अलावा अन्य देशों में यह नहीं मिलता। अन्य धर्मों में जहां भी यह पाया जाता है वह हिन्दू धर्म से ही वहां गया है। सारी सामाजिक–सांस्कृतिक बुराइयों की जननी हिन्दू धर्म है और इससे मुक्त होना जरूरी है।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था, जातिभेद को समाप्त करने की दृष्टि से बुनियादी चिन्तन अपने प्रसिद्ध ग्रंथ ''ऐनिहिलेशन आफ कास्ट''

35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 8–9 दिसम्बर, 2019 को दिल्ली में

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में द्विदिवसीय 35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन पंचशील आश्रम, झड़ोदा गांव, (बुराड़ी बाई पास), निरंकारी समागम ग्राउंड के सामने, आउटर रिंग रोड, दिल्ली–84 में 8–9 दिसम्बर, 2019 को आयोजित किया जा रहा है। इसमें देश के सभी राज्यों के, सभी भाषाओं के दलितोत्थान में जुटे दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, सम्पादक आदि भाग लेंगे जो दलितोत्थान विषयों पर विचार–विमर्श करेंगे। दलित नेताओं को भी इस सम्मेलन में आमत्रित किया गया है।

सम्मेलन में दलितोत्थान में कार्यरत दलित साहित्यकारों, दलित लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों और समाजसेवियों को बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर, महात्मा जोतिबा फुले, भगवान बुद्ध, वीरांगना सावित्रीबाई फुले आदि राष्ट्रीय अवार्डों से सम्मानित किया जायेगा। आप सम्मेलन में इन अवार्डों से सम्मानार्थ अपना 'बायोडाटा' अकादमी कार्यालय को भेज सकते हैं। इस अवसर पर प्रकाशित 'अकादमी–स्मारिका' के लिए आप अपनी रचना भी भेज सकते हैं।

सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में आप शामिल होकर दलितोत्थान विषयों पर अपने विचार भी रख सकेंगे। इसके लिए आपको अपने विचार/ उद्बोधन/सुझावों को लिखित रूप में अग्रिम भेजना होगा। सम्मेलन से सम्बन्धित अन्य जानकारी आप हमारे फोन/मोबाईल पर सम्पर्क करके ले सकते हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर	कार्यालय	जय सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष	फोन: 011-27421449	*राष्ट्रीय महासचिव*
मो. : 9810278936	011-27421460	मो. 9891989175

E-mail: jay.sumanakshar@gmail.com

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A–9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली–33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली–9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक – श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–110009